परिशिष्ट क्र. 2

डॉ. देवेश ठाकुर जी से प्राप्त पत्र

परिशिष्ट 2

१. आपके सभी उपन्यासोंमें आपको कौनसा उपन्यास प्रिय लगता है और क्यों ?

मुझे अपने सभी उपन्यास अच्छे लगते हैं। मेरे आत्मज हैं न। इसलिए। वैसे पाठकों ने [illegible], [illegible], शिखर पुरुष और शून्य से शिखर तक को विशेष रूप से पसंद किया है।

२. देवेशजी, गुरुकुल और शिखरपुरुष उपन्यास लिखने की प्रेरणा आपको कैसे मिली ?

मैंने गुरुकुल और शिखरपुरुष के नायकों की घटनाओं को [illegible] किया है। वैसे मेरा प्रत्येक उपन्यास मेरे अपने अनुभवों पर आधारित है।

३. गुरुकुल लिखने पर शिखरपुरुष लिखने की आवश्यकता आपने क्यों महसुस की ?

'गुरुकुल' का कैनवास छोटा था — उसमें अनेक वे बातें नहीं आ सकती थीं जो मैंने अपने अध्यापकीय जीवन में देखी, भोगी और महसूस की थीं। तो 'शिखर पुरुष' लिखने की आवश्यकता महसूस हुई।

४. उपन्यास का नायक डॉ. शीतांशु क्या आप खुद हैं ?

क्या आप अध्यापक और पाठकोंके सामने डॉ. शीतांशु का ही आदर्श रखना चाहते हैं ?

६. आलोच्य उपन्यासों को लिखकर आपको किन संकटों का सामना करना पडा ?

किन्हीं विशेष संकटों का सामना करना पड़ा। हाँ, गुरुकुल के दर्पण के बाद एक बात बड़ी मज़ेदार हुई। मेरे अध्यापक मित्र एक दूसरे से कहते थे कि यहाँ पत्र तुम हो। हालांकि हकीकत में वे सभी मेरी कृति के पात्र थे।

७. आलोच्य उपन्यासोंमें शिवाजी विश्वविद्यालयसे संबंधित (संलग्नित) कुछ अध्यापक आपके लक्ष्य बने हैं ?

जी नहीं। सभी अध्यापक मेरे समकालीन एवं विश्वविद्यालय के सहकर्मी रहे हैं।

८. 'शिखरपुरुष' उपन्यास के बाद उपन्यास लेखन में काफी अंतर दिखाई देता है ? क्यों ?

यदि आप मेरे उपन्यास लेखन में आए अन्तर की बात कर रही हैं तो 'शिखर पुरुष' के प्रकाशन के बाद, लम्बे अंतराल से मेरे दो उपन्यास प्रकाशित हुए हैं। नवम्बर 2004 में 'जंगल के जुगनू' तथा 2005 फरवरी में 'कोहरा बेला'।

सामान्यतः अन्य लेखकों के इधर के उपन्यासों को मैंने पढ़ा नहीं है।

९. समकालीन उपन्यासों के बारे में आपकी क्या राय है ?

कुछ लोग बहुत अच्छा लिख रहे हैं। कुछ अच्छे उपन्यास भी प्रकाश में आए हैं। लेकिन ओछा लेखन हमेशा होता आया है, लम्बी अवधि तक चलने वाले उपन्यासों की संख्या कम ही होगी।

१०. एक सफल लेखक की हैसियत से आप नये लेखकोंको तथा नवयुवकोंको कौनसा संदेश देना चाहेंगे ?

नए लेखक अपनी सच्चाई से जुड़ें और अपने निजी, सामाजिक, राजनीतिक अनुभवों को लिपि-बद्ध करें तभी कुछ आशा की जा सकती है।

११. संप्रति आप क्या कर रहे हैं और भविष्य में आपकी कोई रचना प्रकाशित होने वाली है?

संप्रति मैंने बुद्ध पर एक पुस्तक 'बुद्ध गाथा' पूरी की है। और हाल ही एक उपन्यास ' ~~[illegible]~~ 'जीवा' भी पूरा किया है। अब मैं एक और उपन्यास 'देवता के गुनाह' पर कार्य कर रहा हूँ। वैसे इन दिनों मेरा अधिकांश समय * अंग्रेजी पत्रिका (मासिक) Awareness World का हिंदी अनुवाद करने में जा रहा है। पूरी पत्रिका का अनुवाद मैं ही कर रहा हूँ पिछले कई माह से। यह अनुभव भी अच्छा बन रहा है।

१२. शिक्षा व्यवस्थामें समूल परिवर्तन हेतु आप कौनसे बुनियादी परिवर्तन चाहते हैं ?

श्रीलाल शुक्ल ने ठीक कहा है कि शिक्षा पद्धति रास्ते में पड़ी कुतिया है। इस उक्ति को आगे बढ़ाते हुए मैं कहना चाहूँगा कि शिक्षा-क्षेत्र से पहले नपुंसक कुत्तों को बाहर किया जाए तभी बुनियादी परिवर्तन की बात सोची-कही जा सकती है।

१३. क्या पाठशाला, स्कूल और कॉलेजोंको शिक्षामहर्षियों (?) ने रुपये कमाने का अड्डा बनाया है, तो इस बाजारीकरण प्रवृत्तीपर रोकथाम कैसे लगायी जा सकती है ?

असल में यह प्रश्न शिक्षा के बुनियादी परिवर्तन से जुड़ा हुआ है। काफी बड़ा प्रश्न है। इसका उत्तर ५-६ पंक्तियों में नहीं दिया जा सकता।

१४. श्रीलाल शुक्लने 'रंगदरबारी'में कहा है, "वर्तमान शिक्षा पध्दती रास्ते में पडी कुतियाँ है। जिसे कोई भी लात मार सकता है।" इस संदर्भमें आपकी क्या राय है ?

मेरी राय श्रीलाल शुक्ल की राय से मिलती है।

१५. आज तीव्र गतीसे शिक्षा का निजीकरण होनेकी संभावना दिखाई दे रही है ? क्या इससे शिक्षा व्यवस्था में प्रचलित कमियाँ कम होंगी या नई समस्याएँ उत्पन्न होंगी ?

यह ~~इस~~ निजीकरण की संभावना दो धारी छुरी है। इससे शिक्षा-पद्धति में सुधार भी हो सकता है और यह शिक्षा व्यवस्था को डुबो भी सकती है। इस व्यवस्था के चलते शिक्षा संस्थाओं की कमेटियाँ ज्यादा प्रभावी होंगी। यदि इनका दृष्टिकोण स्वच्छ और चरित्र आदर्श हुआ तो इससे शिक्षा-व्यवस्था ऊँची ऊँचाइयाँ छू सकती है। लेकिन ऐसा होता नहीं क्योंकि हर शाख पर उल्लू बैठे हैं।

१६. आज शिक्षा क्षेत्र में भ्रष्टाचार, अनैतिकता, परीक्षा, शोधकार्य, राजनीति आदि समस्याएँ मुँह बाए खडी हैं। यह स्थिती देशको किस कगार पर लाकर खडा करेगी ?

देश को फिलहाल, राजनेता डुबो रहे हैं। डुबोने का शेष कार्य शिक्षा क्षेत्र के शिक्षक पूरा कर देंगे।

१७. देश का भविष्य युवक होते हैं और युवकों को बनाने का कार्य शिक्षा - व्यवस्था करती है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था, सरकार की शिक्षा संबंधी नितीयाँ और शैक्षिक संस्थाओं में व्याप्त विसंगतियाँ क्या देश के भविष्य को सही मायने में उज्वल बना रही हैं ?

शैक्षिक संस्थाओं में व्याप्त विसंगतियाँ देश की मनीषा के मुँह पर कालिख ही अधिक पोत रही हैं। और जो लोग कालिख पोत रहे हैं, उनका भौतिक भविष्य निश्चित ही उज्ज्वल है।

देवेश ठाकुर